Volume : 3 | Issue : 4 | May 2013 ISSN - 2250-1991

Research Paper Mass Communication

Social Networking : Rojgar aur Riste

सोशल नेटवर्किंग : रोजगार और रिष्ते

* Dr Subodh Kumar

* Assistant Professor & Co-ordinator, Department of Journalism & Mass Communication, Uttarakhand Open University, Haldwani (Nainital).

ABSTRACT

सामाजिक ताने-बाने में बदलाव से इंटरनेट की दुनिया को नए आयाम मिले। पहले पत्र-पत्रिकाएं, किताबें और साहित्यिक ग्रंथ लोगों के मित्र हुआ करते थे, लेकिन अब इंटरनेट की दुनिया ही लोगों का घरबार बन गई है। उस दौर में कहे-सुने पर प्रतिक्रिया के लिए इंतजार करना होता था, लेकिन अब इंटरनेट ने त्वरित 'फीडबैक' की सुविधा देकर दोतरफा संवाद की प्रक्रिया को नया आयाम दिया है। सोशल नेटवर्किंग साइट्स का प्रभाव लगातार गहराता जा रहा है। इंटरनेट ने निजता को ज्यादा बढ़ावा दिया है और सामाजिकता की परिभाषा को ज्यादा चोट पहुंचाई है। पर अब हवा बदल रही है। इस षोध पत्र के माध्यम से सोशल नेटवर्किंग साइट्स और उससे बनते-बिगड़ते रिष्तों के बारे में पड़ताल की गई है। इसके अलावा रोजगार के खुलते रास्तों का भी परीक्षण किया गया है।

Keywords : सोशल नेटवर्किंग, संवाद, रोजगार, रिष्ते और इंटरनेट।

जाने-माने मीडिया विषेशज्ञ मार्ष मैक्लूहान ने कहा था-माध्यम ही संदेष है। यानी आज के विकसित हो रहे सूचना तंत्र की महत्ता का पता इसी से चलता है। संचार क्रांति के इस युग में जिसके पास सबसे ज्यादा और नवीन सूचनाएं हैं, वही सबसे प्रभावी है। अब युद्ध मैदानों में नहीं बल्कि इंटरनेट पर लड़े जा रहे हैं, यानी सूचना की ताकत से ही बलषाली अर्थव्यवस्था का पता चल सकेगा। आज की संचार प्रौद्योगिकी का एक हिस्सा है सोशल नेटवर्किंग साइट्स। इन्हीं के सहारे आज जो लोग इंटरनेट पर अपनी निजता संजोए बैठे थे, वे अब नए परिवेष में सामूहिक रिष्ते गढ़ते दिखाई दे रहे हैं। इन साइट्स पर रिष्ते बन रहे हैं, प्यार की थाप मिल रही है, टेसुए भी पोंछे जा रहे हैं, नौकरियां भी दस्तक दे रही हैं, उत्साह बढ़ाया जा रहा है, कुछ नया करने का चक्र भी चल रहा है तो दूसरी ओर नाराजगी भी है, घृणा फैलाने का कुचक्र भी है, नौकरियों के धोखे भी हैं, झूठ व फरेब ने भी पैर जमा रखा है। हर उम्र और हर वर्ग के लोगों का यह एक 'वर्चुअल संसार' है। इस दुनिया की रचना स्वयं इंसान ने अपने हाथों से की है। फेसबुक, ट्विटर, आरकुट के अलावा कई अन्य सोशल साइट्स पूरी दुनिया के लोगों को एक कड़ी में पिरो रही हैं। इन साइट्स पर लिखी गई एक लाइन का जवाब आपको तत्काल मिल जाता है। आपके चाहने वाले, आपको कोसने वाले और आपकी वाह-वाह करने वाले तुरंत हाजिर हो जाएंगे।

चंद षब्दों से यहां क्रांति का सूत्रपात हो रहा है। चाहे भ्रश्टाचार की लड़ाई हो, अन्ना-रामदेव के आंदोलन हों या फिर कसाब और सरबजीत के मामले, तुरंत तीखी और क्रांतिकारी टिप्पणियों से पूरे देष की 'पल्स' को आप भांप सकते हैं। असके अलावा आधिकारिक और मंत्री स्तरीय टिप्पणियों को खासा तवज्जो दी जाती है। कमेंट पसंद आया तो वाह-वाह वरना षषि थरूर जैसा हाल होते देर नहीं लगती। एक बड़ा चमत्कार हो रहा है, पहले राजनेता, मंत्री और अभिनेता अपनी बात को लोकल अखबारों से षेयर नहीं करते थे या केवल हल्के-फुल्के अंदाज में बयान देते थे। फिर विदेषी समाचार एजेंसियां जब सवाल करतीं तो वे अपनी बात को नए एंगिल से घुमाकर बोलते थे जिससे नए-नए प्रकरण उपजते थे और बवाल मचता था। क्योंकि समाचार एजेंसियों की पहुंच यानी रीच ज्यादा होती थी। अब सोशल नेटवर्किंग साइट्स हैं तो ये सभी अपने बयान उन पर जारी करते हैं। इनकी पहुंच पूरी दुकनया के कोने-कोने तक है। अब चाहे अमिताभ बच्चन हों या षाहरुख खान या फिर केन्द्र-राज्य सरकारों के मंत्री, अपनी बात और षंकाएं वे ट्विटर या फेसबुक पर रखते हैं। क्षमायाचना और माफी, आलोचना व प्रषंसा अब इन्हीं साइट्स के जरिए ही पता चलते हैं। क्रिकेट की सबसे बड़ी समीक्षा इन्हीं साइट्स पर हो रही है। तेंदुलकर को अब क्या करना चाहिए, इसके लिए कई सुझाव यहां की साइट्स पर मौजूद हैं।

रोजगार में सहायक

फेसबुक, ट्विटर और लिंक्डइन जैसी साइट्स अब रोजगार देने के साधन बनते जा रहे हैं। इसके लिए नए-नए प्रयोग होने लगे हैं। कर्मचारियों की रिक्रूटमेंट के लिए साफ्टवेयर बनाए जाने लगे हैं। अब कोई भी नियोक्ता ५०० या दो हजार बायोडाटा नहीं पढ़ता। वह अपने साफ्टवेयर के जरिए ही सभी सीवी को खंगाल लेता है और उसमें से काम के व्यक्तियों को छांट लेता है। ऐसे साफ्टवेयर बना लिए गए हैं जो कर्मचारी की संभावित योग्यता का परीक्षण कर लेते हैं। इसके लिए उन्हें कुछ इनपुट्स चाहिए होते हैं। कुछ साइट्स आनलाइन गेम्स के माध्यम से योग्यता का परीक्षण कर रही हैं। 'टैलेंट कंसलटेंसी' चलाने वाली कैमिस्ट्री ग्रुप ने कुछ आनलाइन गेम तैयार किए हैं। इसके जरिए टेलीकॉम कंपनियां अपने संभावित कर्मचारियों की योग्यता की परख कर सकती हैं। 'एसएचएल' कंपनी ने भी एक आनलाइन थ्रीडी प्रोग्राम तैयार किया है, जिसमें नौकरी का इच्छुक व्यक्ति बैठा होता है और उसके सामने एक कठोर षक्ल वाला बॉस प्रकट होता है। वह बॉस कई कठिन सवाल सामने रखता है और उनके जवाब चाहता है। इसके अलावा एनरिक्रूट एक वीडियो प्रोग्राम है जो नौकरी चाहने वाले लोगों के सामने आनलाइन वेब कैमरे के जरिए तीन सवाल पूछता है। इसके बाद तय हो जाता है कि नियोक्ता को किस व्यक्ति का इंटरव्यू करना है। बीआईए ग्रुप में रिक्रूटमेंट कंसल्टेंट गॉर्डन व्हाइट के अनुसार-आमने-सामने बैठकर किए जाने वाले इंटरव्यू दोनों ही पक्षों के लिए काफी खर्चीले और वक्त जाया करने वाले होते हैं। ऐसे साक्षात्कार आखिरी दौर में ही लिए जा सकेंगे। लेकिन वह यह नहीं मानते कि नियोक्ता की संभावित कर्मचारी से मुलाकात की अहमियत पूरी तरह खत्म हो जाएगी। कंपनियां पहले ही ''एप्लीकेंट ट्रैकिंग सिस्टम'' का इस्तेमाल कर रही हैं, जो नौकरी के इच्छुक लोगों के सीवी का विष्लेशण करते हैं। कोई भी अब हजारों बायोडाटा नहीं पढ़ता, अब ये सब काम ऑटोमेटिक होता है।

गार्डन व्हाइट एक विज्ञापन का जिक्र करते हैं। इसमें एक ऐसे साफ्टवेयर इंजीनियर की जरूरत है, जिसके पास 'लाइनेक्स ऑपरेटिंग सिस्टम की बुनियादी जानकारी' होनी चाहिए। ऐसे में सॉफ्टवेयर सीवी में 'लाइनेक्स' और 'बुनियादी' को एक साथ तलाषेगा। लेकिन साफ्टवेयर के लिए सीवी में दी गई झूठी जानकारियों को पकड़ना मुष्किल होगा। सॉफ्टवेयर कंपनी 'नॉर्थगेट एनरिसो पीपल चेकिंग' का मानना है कि ७० फीसदी से ज्यादा नियोक्ताओं को सीवी पर झूठी जानकारियों के मामले मिले हैं। डिजिटल दुनिया के भावी परिदृष्य पर पैनी नजर रखने वाले माइक रयान का कहना है कि आर्टीफिषियल इंटेलीजेंस और मनोविज्ञान के तालमेल से ही तय होगा कि नौकरी का इच्छुक कोई व्यक्ति कितना आत्मविष्वासी है। अब उम्मीद की जा रही है कि भविश्य में सोशल मीडिया 'डिजिटल टैलेंट पूल' के जरिए लोगों को नौकरी पर रखे जाने की प्रक्रिया में अहम भूमिका अदा करेगा। सोशल रिक्रूटमेंट सॉल्यूषंस से जुड़ी कंपनी जॉबवाइट के सीईओ डैन फिनिगन के मुताबिक-फेसबुक, ट्विटर और लिंक्डइन जैसी सोशल मीडिया वेबसाइट्स नियोक्ताओं को संभावित कर्मचारियों के टैलेंट पूल को बेहतर करने का मौका देती हैं। कई कंपनियां अपने मौजूदा कर्मचारियों को इस बात के लिए प्रेरित करती हैं कि वे ऑनलाइन फ्रेंड्स के साथ अपनी कंपनी में नौकरी के अवसरों की जानकारी साझा करें। विषेशज्ञ मानते हैं कि ये तरीका तेज और कम खर्चीला है। हालांकि फिनिगन चेतावनी देते हैं कि इन सोशल मीडिया नेटवर्कों पर कंपनियों के लिए अपने ब्रांड की छवि को बनाए रखना एक बड़ी चुनौती है। सोशल मीडिया के जरिए आए आवेदनों को संभालना वास्तव में एक बड़ी चुनौती होगा।

बनते और बदलते रिष्ते

आज सोशल मीडिया साइट्स रिष्तों की नई इबारत लिख रहा है। जयपुर की रहने वाली २० वर्षीय इंजीनियरिंग की छात्रा निषा के अनुसार-तीन साल पहले फेसबुक पर अपना अकाउंट खोला। अब अगर घर पर नेट नहीं कनेक्ट होता है तो साइबर कैफे चली जाती हैं। निषा के मुताबिक कोचिंग में एक लड़का पढ़ता था। एक कॉमन फ्रेंड ने उससे मुलाकात कराई थी। दूसरे दिन उसे फ्रेंड रिक्वेस्ट भेज दी और षुरू हो गया दोस्ती का नया दौर। चैटिंग से ही मुलाकातें बढ़ीं और लवस्टोरी परवान चढ़ी। निषा ने कहा कि बीच में दो महीने ऐसे भी आए जिसमें उसकी बातचीत बंद हो गई। बाद में फेसबुक से ही पता चला कि उसकी जिंदगी में क्या चल रहा है। धीरे-धीरे बातचीत हुई और खटास कम हो गई। लखनउ निवासी सुनील की कुछ कहानी भी ऐसी ही है। वह पेषे से षिक्षक हैं, लेकिन फेसबुक पर उनका अपना एक घर है। खाली समय में वह अपने दोस्तों से बतियाने में लगे रहते हैं। उनका कहना है कि फेसबुक बिना भी क्या जीना। चार साल पहले इससे जुड़ा था और अब तक करीब दस लड़कियों से दोस्ती कर चुका हूं।

खो चुके रिष्ते बहाल

जिन रिष्तों को आप पहले भुला चुके थे वे अब सामने आ रहे हैं। ग्राफिक एरा यूनिवर्सिटी में असिस्टेंट प्रोफेसर और देहरादून निवासी प्रवीन सिंह कहते हैं कि १६ साल पहले उनके साथ पढ़ने वाली ममता को खोजा तो उसकी तलाष फेसबुक पर पूरी हुई। दरअसल ममता की बहनों के फेसबुक अकाउंट में जाकर पड़ताल की तो एक नन्हीं सी बालिका की फोटो मिली, जो ममता के चेहरे से मेल खाती थी और उसके अकाउंट में जाकर देखा तो उसने अपनी मां यानी ममता की तस्वीर पोस्ट कर रखी थी, जिसके बाद प्रवीन ने फोन नंबर लेकर ममता से बातें कीं और १६ साल पहले की यादें ताजा हो गईं।

आज फेसबुक की आबादी करीब सौ करोड़ का आंकड़ा पार कर चुकी है। यानी आबादी के लिहाज से यह दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा मुल्क बन गया है। भारत में आंकड़ों के हिसाब से फेसबुक

भले ही तीन फीसदी लोग प्रयोग में ला रहे हों, लेकिन भारतीय यूजर्स की संख्या में दिन-रात बढ़ोत्तरी हो रही है। इससे फेसबुक पर रिष्तों की नई परिभाशा और नए प्रतिमान खड़े हो रहे हैं। सोशल नेटवर्किंग साइट्स ने लोगों को दिल खोलने का मौका दिया। अब लोग कुछ भी कहने में हिचकते नहीं। मसलन आगरा की प्रियंका गुप्ता ने फेसबुक वॉल पर प्रेम का नया रूप लिख दिया। उन्होंने लिखा-*जिंदगी उसके लिए जियो, जो आपके लिए जीता हो, उसके लिए नहीं, जो आपको पूछता तक नहीं। प्यार उससे करो, जो आपसे करता हो, उससे नहीं जिससे आप करते हों।* इस पर तत्काल पांच कमेंट्स और आठ लाइक आ गए। फेसबुक रिष्तों को केवल जोड़ने व तोड़ने का काम नहीं करता, वह आपको स्टेटस बताने का काम भी करता है। 'इट्स काम्प्लिकेटेड' सबसे ज्यादा मषहूर स्टेटस है। इसके अलावा 'लाइक' ऐसा क्लिक है जिससे यूजर को सिर्फ एक सेकेंड में अपनी पसंद जाहिर करने का मौका मिल जाता है। लाइक की षोहरत इतनी है कि इजराइल के एक दंपति ने अपने बच्चे का नाम 'लाइक' ही रख दिया। फेसबुक केवल किस्से व कहानियों, षायरियों का अड्डा नहीं है। यहां अपना हुनर दिखाने का मौका भी मिलता है। कोई पेंटर है तो अपनी पेंटिंग पोस्ट कर रहा है। कोई फोटोग्राफर है तो उसकी नायाब तस्वीरों का कलेक्षन भी मिलेगा। गायक अपने ऑडियो और कलाकार अपने वीडियोज को अपलोड करने लगे हैं। अपनी प्रोफाइल भी अपडेट करते रहते हैं। कहीं पर इसके फायदे हैं तो कोई नुकसान भी उठाता है। मसलन आईआईएम बंगलुरू की छात्रा मालिनी के ब्वायफ्रेंड ने अपने ब्रेकअप का एलान किया तो मालिनी ने सुसाइड कर लिया। ऐसे दुखद किस्से भी फेसबुक के हिस्से में हैं।

निश्कर्श :

निष्चित ही सोशल नेटवर्किंग ने रोजगार और रिष्तों के परिप्रेक्ष्य में एक नई धारा को जन्म दिया है, लेकिन अभी बहुत कुछ करना बाकी है। धोखेबाजी और फरेब से बचने का उपाय अभी सोशल मीडिया को देना होगा। साथ ही कुछ कारगर नीतियां भी लागू करनी होंगी जिससे साइबर अपराध को रोकने में मदद मिल सके। वैसे भी भारतीय सभ्यता और संस्कृति उतने खुलेपन की इजाजत नहीं देती जितनी अमेरिका या अन्य पष्चिमी देषों में है। इसी वजह से हमारे अपने लोग करते तो काफी कुछ हैं पर बताने से डरते हैं। फेसबुक यूजर्स की तादाद देष में भले ही बढ़ रही हो, लेकिन हम सच बयां करने के मामले में काफी पीछे हैं। रोजगार के लिए संघर्शरत युवा और रिष्ते बनाने में जुटे हर पीढ़ी के लोग इस परंपरा को और पुश्ट करेंगे। आप छूट तो नहीं रहे हैं, वक्त की रफ्तार के साथ चलना चाहते हैं तो सोशल नेटवर्किंग का सहारा लीजिए!

REFERENCES

1- http://www.socialmedianews.com.au/ 2- http://www.watblog.com/social-media-in-india 3- http://www.guardian.co.uk/media/bbc-news-social-media 4- Some Articles from The Times of India, The Hindu, Indian Express. 5- http://www.amarujala.com 6- Journal of Media Studies, Centre of Media Studies, IPS, Univ. of Allahabad.